

इसी बीच में यह भी कहना चाहूंगा कि निरस्त्रीकरण सम्मेलन सर्वसम्पत्ति से निर्णय लेता है कि जबकि सयुक्त राष्ट्र महासभा के अपने क्रियाविधिक नियम हैं। तथापि, हमारा दृष्टिकोण सिद्धान्तगत है जिसका हम इस मंच पर भी खुलासा करेंगे।

बहुत से देशों ने जिनके साथ हमारे धनिष्ठ द्विपक्षीय संबंध हैं इस मसले पर एक ऐसा दृष्टिकोण अपनाया है जो हमारे दृष्टिकोण से भिन्न है। हम अपनी बातचीत के जरिए अपने दृष्टिकोण के औचित्य का खुलासा करने का प्रयास करते रहे हैं। हमारा मानना है कि धनिष्ठ द्विपक्षीय संबंधों के लिए सभी मसलों पर सहमति होनी जरूरी नहीं है लेकिन एक-दूसरे की राष्ट्रीय हित-चिन्ताओं के प्रति पारस्परिक सम्मान होना ही चाहिए। हम सभी देशों के साथ अपने संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए वचनबद्ध हैं तथा विश्वास है कि इस मसले पर हमारे मतभेद हमारे द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित नहीं करेंगे।

अपराहन 4-48 1/2 बजे

सामान्य बजट, 1996-97-सामान्य चर्चा (जारी)

सभापति महोदय : अब हम सामान्य बजट पर पुनः चर्चा आरम्भ करेंगे।

श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह :

[हिन्दी]

श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह (औरंगाबाद) : सभापति महोदय, सबसे पहले मैं इस सरकार के वित्त मंत्री माननीय चिदम्बर साहब का आभार प्रकट करना चाहता हूँ कि उन्होंने गरीबों-मुखी, किसानों-मुखी, मजदूरों-मुखी, सपतामुखी बजट पेश किया। ... (व्यवधान) मैं जानता हूँ कि टोका-टोकी होगी। जब नए सदस्य बोलने के लिए खड़े होते हैं तो टोका-टोकी होती है। लेकिन जब आदरणीय जोशी जी बोल रहे थे, मैं नहीं समझता कि कहीं से टोका-टोकी की गई हो, हम लोगों ने टोका-टोकी की हो, लेकिन यहां टोका-टोकी होगी ... (व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (सखनऊ) : नहीं होगी।

सभापति महोदय : नए सदस्य को बोलने दें, कृपया टोका-टोकी न करें।

श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह : गरीबों-मुखी मैं इसलिए कहता हूँ कि गरीबी उन्मूलन के लिए बजट में जो 1263 करोड़ रुपए का प्रावधान था, उसको बढ़ाकर 2195 करोड़ रुपए किया गया है। ग्रामीण रोजगार में पहले 8000 करोड़ रुपए का प्रावधान था, उसको बढ़ाकर 10.5 हजार करोड़ रुपए कर दिया गया। जब यह ग्रामीण रोजगारों-मुखी बजट पेश किया गया तो इसे किसान विरोधी, इसे मजदूर विरोधी कहा गया और इसका विरोध और आलोचना ही विपक्ष द्वारा की गई। मैं कहना चाहता हूँ कि यह आलोचना ठीक है, आप करते हैं, करनी चाहिए। आलोचना करना आपका फर्ज है, लेकिन कहा गया कि

अपराहन 4.50 बजे

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

बजट में जो राशि है, वह सब ऋण देने में समाप्त हो जाती है और कोई

नई आय व उपाय नहीं किया गया। मैं यह जानना चाहता हूँ कि कोई सुझाव आपने प्रस्तुत नहीं किया, आपने कोई ऐसा सुझाव नहीं रखा, लेकिन कहते हैं कि बेरोजगारी दूर होनी चाहिए, प्रप्याचार दूर होना चाहिए, महंगाई दूर होनी चाहिए, आशिसा दूर होनी चाहिए, सारी चीजें दूर करने की बात-करते हैं, लेकिन कैसे दूर होनी चाहिए, इसपर विपक्ष की ओर से कोई ठोस कार्यक्रम प्रस्तुत नहीं किया जाता। केवल कह दिया गया है, केवल आलोचना कर दी जाती है। यह बात भी होनी चाहिए कि आपकी ओर से एक ठोस कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाय, एक ठोस चीज आप रखें ताकि देश के लोग समझें कि यह किसान विरोधी कैसे है।

जब किसानों के लिए हमने 30 हजार ट्रेक्टर लेने पर सक्खिडी सारे लोगों को दी तो यह किसान विरोधी हो गया। जब मजदूरों के लिए ग्रामीण रोजगार के लिए हम राशि बढ़ा दी तो यह ग्रामीण रोजगार के विरोध में हो गया। ग्रामीण मूल ढांचे के विकास में 2500 करोड़ रुपए की अतिरिक्त राशि आर्बिट्रि की गई अब कैसे हैं, ढांचागत उद्योग के लिए, जीवन बीमा को सुदृढ़ किया गया। एक चीज कही गई कि यह बजट मनमोहन सिंह का बजट है,

अपराहन 5.00 बजे

मनमोहन सिंह के बजट में अधिक रेवेन्यु जुटाने के लिए कम आय दर पर बुनियाद रखी गई थी। लेकिन मानवीय चिदम्बर ने कार्पोरेट सरचार्ज को समाप्त करना उचित नहीं समझा। इसके अलावा निगमों पर 12 प्रतिशत वैकल्पिक कर लगाने का प्रस्ताव किया है। मुद्रास्फीति पर 6-7 प्रतिशत तक नियंत्रण रखने की बात कही है।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आप कुछ समय बाद अपना भाषण जारी रख सकते हैं। अब 5.00 बजे हैं।

प्रधान मंत्री द्वारा वक्तव्य

अमरनाथ यात्रा

प्रधानमंत्री (श्री एच. डी. देवेगौड़ा) : महोदय, मैं आपकी अनुमति से निम्न वक्तव्य देना चाहता हूँ क्योंकि माननीय गृह मंत्री अभी तक जम्मू से दिल्ली नहीं आए हैं। आपके निदेशानुसार, मैं वक्तव्य दे रहा हूँ। इसके अतिरिक्त, मैं समझता हूँ कि कल जब माननीय गृह मंत्री वापस आ जाएंगे, तब इस सभा को और आगे जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी। आज यह संभव नहीं हो पाएगा।

इस वर्ष अमरनाथ यात्रा, को अभूतपूर्व खराब मौसम, भारी वर्षा, हिमपात, भूस्खलन और बाढ़ से उत्पन्न महाविपदा के कारण बीच में ही रोकना पड़ा। उपलब्ध सूचना के अनुसार, 121 व्यक्तियों की जाने गर्यी, जिनमें से अधिकतर व्यक्तियों की मृत्यु हृदय और सांस की तकलीफ और ठंड लगने से हुई। अत्यन्त खराब मौसम जारी रहने के कारण राहत अभियान बुरी तरह से प्रभावित हुए, जिससे सभी प्रकार की संचार व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गयी और हवाई जहाज से बचाव और राहत अभियान भी रूका पड़ा रहा।

2. इस वर्ष यात्रा 16 अगस्त को शुरू हुई थी और 28 अगस्त को मुख्य दर्शन के बाद, इसे 3 सितम्बर को पूरी होनी थी। विस्तृत योजना बनायी गयी थी और 1995 में 70,000 और 1994 में 40,000 यात्रियों की तुलना में इस यात्रा में लगभग 1 लाख यात्रियों के भाग लेने के अनुमान के अनुसार प्रबंध किए गए थे।

3. इस वर्ष यात्रा के लिए निम्नलिखित प्रमुख व्यवस्थाएँ की गई थी:-

- (I) चंदनवाड़ी, शेषनाग और पंचतरणी स्थित पड़ावों पर 1200-1200 टेंट अर्थात्, कुल मिलाकर 3600 टेंट लगाए गए थे जबकि 1995 और 1994 के दौरान इन स्थानों पर क्रमशः कुल 900 और 750 टेंट लगाए गए थे। शुरूआत में लगभग 1900 टेंट लगाने की योजना थी किन्तु यात्रियों को अधिक सुविधा देने और यात्रा के लिए अनुमानित से अधिक संख्या में तीर्थ यात्री आ जाने की स्थिति में आपात प्रबंध के रूप में टेंटों की संख्या को बढ़ा दिया गया था। इसके अलावा शेषनाग और पंचतरणी में तीन-तीन कंक्रीट शैड बनाए गए थे। इन प्रबंधों के माध्यम से शेषनाग एवं पंचतरणी, प्रत्येक में लगभग 18,000-20,000 तक तीर्थयात्रियों को ठहराने की व्यवस्था की गई थी।
- (II) 25 मीट्रिक टन चावल और आटा, 7 टन चीनी और 8 टन चोकर भी, शेषनाग और पंचतरणी में जमा की गयी थी। ये प्रबन्ध, जम्मू एवं कश्मीर पर्यटन विकास निगम द्वारा चंदनवाड़ी, शेषनाग और पंचतरणी में तथा पहलगाम एवं पवित्र गुफा के बीच पड़ाव स्थलों पर तीर्थयात्रियों को भोजन उपलब्ध कराने के लिए लगाए गए 39 निशुल्क लंगरों के अलावा थे। साथ ही, पूरे यात्रा मार्ग पर खाने की चीजें, चाय बिस्कुट आदि बेचने के लिए बड़ी संख्या में स्थानीय निजी दुकानदारों ने दुकानें लगाई थी।
- (III) पहलगाम स्थित सरकारी अस्पताल को बेस अस्पताल के रूप में उसकी पूरी क्षमता सहित प्रयोग में लाया गया और वहां पर्याप्त मात्रा में दवाएँ रखी गयी थीं। राज्य सरकार द्वारा चंदनवाड़ी जोजीबल, महागुमास टाप, पंचतरणी और पवित्र गुफा पर चिकित्सा राहत उपलब्ध करवाने के प्रबन्ध किए गए थे। इन स्थानों पर बड़ी मात्रा में दवाओं और आक्सीजन सिलिंडर उपलब्ध कराए गए तथा डाक्टर और पैरा मेडीकल स्टाफ वहां तैनात किया गया। इसके अलावा सेना और सीमा सुरक्षा बल ने भी चंदनवाड़ी, शेषनाग और पंचतरणी में चिकित्सा राहत शिविर लगाए हैं।
- (IV) तीर्थयात्रियों द्वारा ले जाए जा रहे बिस्तरों की कमी को पूरा करने के लिए उनके लिए 14,500 कम्बलों की व्यवस्था की गई।
- (V) यात्रा मार्ग पर विभिन्न स्थानों पर पर्याप्त मात्रा में जलाने की लकड़ी रखी गई थी। इसके अतिरिक्त, वहां पर लगाए "लंगरों"

की आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक हजार से अधिक एल. पी. जी. सिलिंडर रखे गए थे।

(VI) तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए बड़ी संख्या में खच्चरों और कुलियों की व्यवस्था की गई थी।

4. पहलगाम से पवित्र गुफा तक का यात्रा मार्ग 45 कि.मी. से अधिक लम्बा है जिसमें अधिकांशतः 12,000 कि. मी. की ऊंचाई वाला मार्ग दुर्गम पहाड़ों पर सीधी चढ़ाई वाला है। इस ऊंचाई पर सामान्यतः आक्सीजन की कमी से उत्पन्न होने वाली समस्याएँ पैदा होती हैं, जो कि अधिक आयु और कमजोर लोगों के लिए विशेषरूप से गंभीर हो सकती हैं।

5. इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यात्रियों के मार्ग-दर्शन हेतु "क्या करें" और "क्या न करें" तथा बुनियादी सूचना और अपेक्षाओं संबंधी सूचना बहुत पहले ही छपवा ली गयी थी तथा उसको प्रकाशित भी करवा दिया गया था (जानकारी के पत्रों की प्रतिलिपियां संलग्न हैं।) इन्हें अखबारों इत्यादि के द्वारा व्यापक तौर पर प्रचारित भी किया गया था। इनमें, अन्या बातों के साथ-साथ, जिन बातों पर जोर दिया गया, उनमें शामिल हैं :-

- (I) यात्रियों को अपने साथ कम्बल/स्लीपिंग बैग, भारी ऊनी कपड़े, विंड शीटर्स/बरसाती, वाटर-प्रूफ जूते, इत्यादि ले जाने चाहिए। वास्तव में, यह कहा गया था कि उपर्युक्त सामान साथ न ले जाने वाले यात्रियों का यात्रा के लिए पंजीकृत नहीं किया जाएगा। इस बात की सुनिश्चित करने की भी व्यवस्था की गई थी कि जम्मू में जिस स्थान पर यात्रा के लिए पंजीकरण किया जा रहा था वहां पर ये सामान बेचने वाली दुकानें यात्रियों की सुविधा हेतु देर रात तक खुली रहें।
- (II) यह सुनिश्चित करवाने के लिए कि वह यात्रा पर जाने के लिए शरीरिक तौर पर स्वस्थ है, प्रत्येक तीर्थयात्री को अपनी चिकित्सा जांच करवाने के लिए कहा गया था।
- (III) यात्रियों को अपने साथ बिस्कुट, मिठाई, दुग्ध पाउडर, डिब्बा बंद भोजन, इत्यादि तथा निजी चिकित्सा किट ले जाने की सलाह दी गई थी तथा यह भी सलाह दी गई थी कि वे अपने टीका अवश्य लगवा लें।

6. यात्रा निर्धारित कार्यक्रमानुसार 16 अगस्त को प्रारम्भ हुई और इसी दिन लगभग 25,000 तीर्थयात्रियों ने जम्मू से पहलगाम की यात्रा शुरू की। 21 अगस्त तक लगभग 1.2 लाख तीर्थयात्री जम्मू से अमरनाथ के लिए चल पड़े थे और तब तक यात्रा सुचारू ढंग से चल रही थी, यद्यपि हृदयगति रुक जाने/श्वास प्रक्रिया बंद हो जाने के कारण 11 व्यक्तियों की मृत्यु हो चुकी थी।

7. 21-22 अगस्त की रात को मौसम में अचानक परिवर्तन आया और यात्रा के मार्ग, अर्थात् पवित्र गुफा, पंचतरणी, महागुमास और शेषनाग पर अधिक ऊंचाई वाले मार्ग पर हिमपात और बर्फले सूपान सहित भारी

वर्षा होनी शुरू हो गई। अप्रत्याशित वर्षा और हिमपात तथा बर्फाली हवाएं बिना रुके 24 अगस्त तक चलती रही तथा अधिक ऊंचाई वाले स्थानों पर तापमान बहुत अधिक गिर गया। अत्यधिक भारी वर्षा के कारण राज्य में अनेक स्थानों पर भू-स्खलन हुआ और बाढ़ आ गई तथा राष्ट्रीय राजमार्ग तथा जम्मू-श्रीनगर और श्रीनगर-पहलगाम के बीच का मार्ग कई स्थानों पर अवरूद्ध हो गया। इसी कारण पहलगाम और पवित्र गुफा के बीच कई स्थानों और जम्मू और पहलगाम के बीच के यात्रा मार्ग पर कई स्थानों में तीर्थ यात्री फंस गए। उसी समय, वहां लगातार भारी वर्षा इस सभी के कारण पहलगाम और पवित्र गुफा के बीच के मार्ग पर संकट में फंसे तीर्थ यात्रियों को निकालने के लिए हवाई उड़ाने भरना असम्भव हो गया हालांकि राहत और बचाव अभियान शुरू करने के लिए एक बैकल्पिक व्यवस्था के रूप में हेलीकाप्टरों को प्रयोग करने के लिए तैयार रखा गया था।

8. 23 अगस्त को लगभग 52,000 तीर्थयात्री पंचतरणी (27,000) शेषनाग (11,000) तथा चंदनवाड़ी (14,500) की ऊंचाई वाली जगहों पर फंसे हुए थे। बरसात एवं बर्फबारी के बावजूद 24 अगस्त को सेना एवं सुरक्षा बल यूनिटों तथा यात्रा मार्ग पर तैनात पुलिस ने ऊंचाई वाली जगहों में फंसे तीर्थयात्रियों को निचले इलाकों तक लाने के लिए भरसक प्रयास किए। 24 अगस्त की शाम के बाद बरसात जैसे ही रुकी, हेलीकाप्टरों को भी काम में जुटा दिया गया और अधिकांश तीर्थयात्रियों को पहलगाम ले आया गया है। नवीनतम उपलब्ध सूचना के अनुसार ऊंचाई वाली जगहों पर फंसे तीर्थयात्रियों की संख्या इस प्रकार है : पंचतरणी (150), शेषनाग (100) तथा (चंदनवाड़ी) (8,000)। लगभग 2,000 तीर्थयात्रियों को, अमरनाथ से श्रीनगर को आने वाले एक बैकल्पिक मार्ग पर स्थित बालताल नामक जगह पर भी ले आया गया है और उन्हें श्रीनगर लाने के प्रयास किए जा रहे हैं जहां कि उन्हें ठहराने के लिए शिविर लगाए गए हैं।
9. भोजन एवं दवाइयों की अतिरिक्त आपूर्ति पहलगाम भेजी गई है तथा शेषनाग और चंदनवाड़ी के लिए भी आपूर्ति, हवाई मार्ग से भेजे जाने की प्रक्रिया जारी है। ऐसे 50 व्यक्तियों को जिन्हें तुरन्त ही चिकित्सा सहायता की जरूरत थी, 25 अगस्त को हेलीकाप्टर से श्रीनगर लाया गया। मारे गए व्यक्तियों में से 40 तीर्थयात्रियों के शव बालताल लाए गए हैं और शेष शवों को वहां से लाने के प्रयास किए जा रहे हैं।
10. ले. जनरल सकलानी, सलाहाकार (गृह और पर्यटन) जम्मू और कश्मीर सरकार, अमरनाथ यात्रा के ओवरऑल इन्चार्ज हैं और वे यात्रा के शुरूआती प्रबन्धों और राहत उपायों की गहनता से देख-रेख कर रहे हैं। उन्होंने पूरे रास्ते पर सभी स्थानों का अनेक बार दौरा किया और जैसे ही मौसम ठीक हुआ, वे चिकित्सा सामग्री, कम्बल इत्यादि के साथ तुरन्त पहलगाम और पंचतरणी गए। गृह मंत्रालय ने 23 अगस्त को रक्षा मंत्रालय के साथ सम्पर्क किया और अनुरोध किया कि राहत प्रदान करने के लिए सभी सम्भव सहायता दी जाय। परिणामस्वरूप, रक्षा मंत्रालय ने तुरन्त कार्रवाई की। केन्द्रीय गृह सचिव शनिवार, 24 अगस्त और रविवार 25 अगस्त को पूरे समय कार्यालय में उपस्थित रहे और राज्य सरकार को

प्रत्येक तीन घंटे के बाद रिपोर्ट भेजने का निर्देश दिया। पुलिस नियंत्रण कक्ष, श्रीनगर में एक विशेष सूचना केन्द्र भी खोला गया ताकि यात्रियों के परिवारों और रिश्तेदारों को उनके बारे में सूचना मिल सके।

11. मृतकों में से लगभग 73 की शिनाख्त कर ली गई है और सूची, प्रैस को जारी कर दी गई है। चूंकि अनन्तनाग और जम्मू के बीच राजमार्ग अवरूद्ध है और इसे खोलने में 2-3 दिन लग जाएंगे इसलिए श्रीनगर से शवों का हवाई मार्ग से लाने की संभावनाएं तलाशी जा रही हैं?
12. सीमा सड़क संगठन, अवरूद्ध सड़कों को साफ करने और भूस्खलनों को हटाने के प्रयासों में दिन रात लगा हुआ है ताकि फंसे हुए तीर्थयात्री जम्मू की ओर उतरना शुरू कर सकें। तथापि, पहलगाम एवं खानाबल के बीच तथा राष्ट्रीय राजमार्ग पर खानाबल और श्रीनगर के बीच सड़क के पानी में डूब जाने और बाढ़ के कारण भी समस्याओं में जुझना पड़ रहा है। जिससे सड़क से आवागमन में भी गतिरोध पैदा हुआ है।
13. रेल मंत्रालय ने, तीर्थयात्रियों को बिना किसी विलम्ब के जम्मू से ले जाने के लिए 7 विशेष रेलगाड़ियां चलाई हैं।
14. अत्यधिक कठिन मौसमी स्थितियों को देखते हुए राज्य सरकार ने गुफा की तरफ किसी भी यात्री को आगे बढ़ने से रोक दिया है। राष्ट्रीय राजमार्ग पर सड़क अवरूद्ध हो जाने से ऊधमपुर में फंस गई छड़ी मुबारक को भी वायुमार्ग से 25 अगस्त को श्रीनगर ले जाया गया और 28 अगस्त को पवित्र गुफा की ओर इसकी अंतिम पारंपरिक यात्रा हेतु इसे, साधुओं के एक समूह के साथ 27 अगस्त को पंचतरणी ले जाया जाएगा। उसी दिन यह छड़ी मुबारक पंचतरणी लौट आएगी तथा इसे वापस, हवाई मार्ग से ही श्रीनगर ले जाया जाएगा।
15. पिछले दो या तीन वर्षों की भांति, शुरूआत से ही इस बात की आशंका थी कि यात्रियों को उग्रवादियों से सम्भावित खतरा हो सकता है और पारंपरिक पड़ाव स्थलों पर विस्फोटक पदार्थ आदि रखे जाने के संभावित प्रयासों की खबरें थी। इन आशंकाओं और संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए यात्रा की शुरूआत से ठीक पहले ही चंदनवाड़ी और शेषनाग में शिविरों के स्थल भी, अन्यत्र अवस्थित किए गए ताकि तीर्थयात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। सुरक्षा संबंधी सावधानियों और कड़े प्रबंधों के परिणाम स्वरूप यात्रा अभी तक शांतिपूर्वक तथा इस परिप्रेक्ष्य में बिना किसी बाधा के गुजरी।
16. पूर्व उल्लिखित बातों से यह पता चलता है कि इस वर्ष यात्रा में रिकार्ड संख्या में लोगों ने भाग लिया। यात्रा को सुरक्षित और सुचारु रूप से आयोजित करने के लिए राज्य प्रशासन और सुरक्षा बल पूरी तरह सक्रिय थे और पिछले वर्षों की तुलना में, आवास, वाढ़ चिकित्सा, सहायता इत्यादि की व्यवस्था में पर्याप्त रूप से वृद्धि की गयी थी। इस बार भी, स्थानीय कर्मचारियों के भरपूर सहयोग से तथा खासतौर से यह बड़ी सुखद बात रही कि स्थानीय जनता के सभी वर्गों, जो यात्रा के लिए विभिन्न सेवाएं उपलब्ध कराते हैं, इस यात्रा में भाग लेकर इस सभी प्रबन्धों को और सुदृढ़ किया। यात्रा 21 अगस्त तक सुचारु रूप से चलती रही जब अचानक

और अभूतपूर्व वर्षा और हिमपात के रूप में यह दुःखद घटना घटी। इस आपदा की विशालता और अभूतपूर्व प्रकृति का पता इस तथ्य से चलता है कि कम से कम चार सुरक्षा बल कार्मिक और 8 कुली और खच्चर वाले भी हताहत हो गए, जोकि आमतौर पर पहाड़ों की उचाईयों और स्थानीय परिस्थितियों के प्रति अभ्यस्त होते हैं और शरीरिक रूप से भी स्वस्थ होते हैं।

17. जो यात्री विभिन्न स्थानों पर रुके पड़े है उन्हें राहत और मदद उपलब्ध कराने के लिए और यह सुनिश्चित करने के लिए कि अवरूद्ध मार्गों को जल्दी से जल्दी साफ किया जाय, ताकि यात्री अपने घरों को जा सकें, राज्य प्रशासन, सेना और सुरक्षा बलों द्वारा युद्ध स्तर पर प्रयास किए गए हैं और जारी हैं। इस प्राकृतिक आपदा में जिनकी जानें गयी हैं उनके परिवारों को प्रधानमंत्री के राहत कोष से 50,000 रु. की अनुग्रहपूर्वक राहत स्वीकृत की गयी है और राज्य सरकार द्वारा भी इसके बराबर राशि की अनुग्रहपूर्वक राहत घोषण की गयी है।

श्री अमरनाथ यात्रा

यात्रियों के लिए हिदायत

यात्रा के लिए प्रस्थान करने से पहले अपने सभी प्रबन्ध भली प्रकार पूरे कर लीजिए इन में नीचे लिखी बातों पर विशेष ध्यान दें।

1. इस दुर्गम यात्रा पर जाने से पूर्व अपने स्वास्थ्य की जांच किसी अच्छे डाक्टर से अवश्य करवा लें क्योंकि इस के लिए शरीरिक तन्दरुस्ती अत्यन्त आवश्यक है। इस यात्रा में आपको कठिन पर्वतों को लांघ कर जाना होगा, जिसमें 'महागुणस' की 14000 फुट ऊंची चोटी भी है।
2. यात्रा में आपके साथ निम्नलिखित वस्तुएं अवश्य होनी चाहिए :-
(क) तम्बू, (ख) ऊनी वस्त्र, (ग) ओवर कोट, (घ) वरसाती, (ङ) वाटर प्रूफ बूट, (च) टार्च, (छ) छड़ी, (ज) कम्बल-स्लीपिंग बैग।
3. खाने पीने का आवश्यक सामान बिस्कुट, मिठाइयां दूध पौडर तथा कुछ खुराक के बन्द डिब्बे यात्रा में अपने साथ रखें।
4. आपकी सुविधा के लिए राशन, मिट्टी का तेल तथा जलाने की लकड़ी का प्रबन्ध राज्य सरकार की ओर से निर्धारित मूल्य पर यात्रा के विभिन्न शिविरों पर किया गया है।
5. अपने साथ ले जाने वाले तम्बू का भली प्रकार से निरीक्षण कर लें।
6. क्या आप के साथ जाने वाले मजदूर, छोड़े वाले अथवा टण्डी वाले रजिस्टर्ड (Registered) हैं तथा उनके पास टोकन (Token) हैं।
7. अपने साथ ले जाने वाले छोड़े तथा मजदूरों को अपने साथ रखें। उन से बिछुड़ जाने पर आपको परेशान होने की संभावना है।
8. यात्रा करते समय अनुशासन रखें और धीरे-धीरे अपने रास्ते पर आगे बढ़ते रहें।

9. यात्रा अधिकारी की ओर से समय समय पर दी जाने वाली हिदायतों पर अमल करें।
10. राज्य की और पोलीस, स्वास्थ्य, खुराक इत्यादि विभिन्न विभागों के अधिकारी यात्रा में आपकी सुविधा के लिए आप के साथ रहेंगे।
11. कठिन चढ़ाई पर अपने आप को थकावट से बचाएं। ऐसे स्थान पर आराम के लिए न रुकें जहां ठहरने की मनाही हो।
12. यातायात सम्बन्धी नियमों का पालन कीजिए तथा अपने सह यात्रियों को धकेल कर आगे बढ़ने का प्रयत्न न करें।
13. सरकार की ओर से कुल्लियों, घोड़ों और टण्डी वालों के किराए तथा दूसरी खाने पीने की चीजों के मूल्य निर्धारित किए गए हैं इसलिए आप किसी भी स्थान पर अधिक मूल्य न दें।
14. स्वास्थ्य विभाग की ओर से चिकित्सा सम्बन्धी प्रबन्ध बिना किसी मूल्य के किए गए हैं।

नोट - बारह वर्ष से कम आयु के बच्चों, बूढ़ों, अस्वस्थ तथा उपयुक्त कपड़ों के बिना जाने वाले यात्रियों को पहलगाम से आगे जाने की आज्ञा नहीं दी जाएगी।

[हिन्दी]

श्रीमती सुचमा स्वराज (दक्षिण दिल्ली) : अध्यक्ष महोदय, यदि प्रधानमंत्री जी के इस वक्तव्य को सत्य मान लिया जाए तो सुबह एक घंटे भर तक जो कुछ माननीय सदस्यों ने कहा वह सब असत्य था? वे सारे आरोप निराधार थे? सारी वेदना बेमानी थी। यहां एक-एक सदस्य खड़ा होकर कह रहा है कि मेरे निर्वाचन क्षेत्र के लोग मुझ से सम्पर्क कर रहे हैं। हम आगे अधिकारियों से सम्पर्क कर रहे हैं वे मिल नहीं रहे हैं। हम एक भी बात उनको कहने की स्थिति में नहीं हैं। यहां प्रधानमंत्री जी वक्तव्य देते हुए कहते हैं कि पहले के यात्रा के प्रबन्ध भी पर्याप्त ही नहीं बल्कि बढ़िया थे और बाद में भी सारी संभाल सुचारू रूप से की गई है। फिर किस बात की डिसकशन और किस बात की चर्चा, जब इस सारी चर्चा का यह जवाब है। इसका मतलब है जो कुछ हम लोगों ने यहां बोला और दलों की सीमाएं तोड़ करके बोला, अलग-अलग लोगों ने अपने-अपने अनुभव, अपनी-अपनी कांस्टीट्यूएन्सी के अनुभव रखें, अगर उन सब का जवाब प्रधानमंत्री जी का यही है कि यह सत्य है तो फिर किसी चर्चा की जरूरत ही क्या है? मैं प्रधानमंत्री जी से पूछना चाहती हूं कि आखिरकार इन्होंने इस तमाम चीजों का कोई नोटिस लिया? यहां जो सुबह माननीय सदस्यों ने कहा उसका इन्होंने कोई नोटिस लिया? इन्होंने अधिकारियों ने जो वक्तव्य लिख कर दे दिया उसको जस का तस इन्होंने पढ़ दिया। ... (ब्यवधान) उस सारी चर्चा के क्या मायने हैं? क्या वे सारी बातें असत्य थी? ... (ब्यवधान) लीपा-पोती भी नहीं है। ... (ब्यवधान)

श्रीमती जयवंती नवीनचन्द्र मेहता (मुम्बई दक्षिण) : महोदय, मुम्बई के लिए मंत्री जी नहीं बोले हैं। मुम्बई के दो सौ लोग अमरनाथ की यात्रा में फंसे पड़े हैं। ... (ब्यवधान)

श्रीमती सुचमा स्वराज : यहां जसवंत सिंह जी कह रहे हैं, सब लोग कह रहे हैं। ... (ब्यवधान) अगर प्रधानमंत्री जी का यह वक्तव्य सत्य है तो चर्चा की